

DPN 6745

1) यज्ञविधि / YAJÑAVIDHI
2) शीतलाष्टकस्तोत्र / ŚĪTALĀṢṬAKA STOTRA

Title :

Run. No. 7470

Cat. No.

Micro. No.

Subject Karmakāṇḍa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 18 x 7

Folios 14

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Yajñavidhi for Gogṛāsa of
Tilamādhava.

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / one side yellow

Beginning, colophon, post-colophon :

- ① अद्येत्यादि वाक्य ॥ यजमानस्य श्री ३ तिलमाधव भट्टारक प्रीति मकरसंकानि महापर्वणि
गौभ्यो गौत्रासार्थं यज्ञनिमित्तार्थेन पुष्पभाजनं समर्पयामि ॥
② इति श्रीस्कन्द पुराणे शीतलाष्टकं समाप्तं ॥ ॥ [यज्ञाभूतिक तिलकधारणमन्त्र] ३. →

अग्रदूतः २ सा द्यौ नैत्रे यन्ता विधिश्च ॥
शीतलाया पाथ द्विद्व ॥ १॥

२ साङ्गान्नप्रयमाविधिश्च ॥
श्रीगोसायपाथकृदके ॥ ॥

२ साङ्गान्वयमाविप्रिय ॥
शीमलाया पाथकिदके ॥ ॥

१ श्री ३ नित्तमा धवाय नमः ॥ नासि माधयं कमाननय
जाजायै ॥ न अथादि वाक् ॥ यक्रमानस्य श्री ३ नित्तमा धव
रु हात्र कयी किमक न सैकानिमहाय वृद्धि (म) (म) (म)
ग्रामार्थय रूनिमित्ता (थ) नयुषा रुक न समर्थयामि ॥
ॐ नमानात्राय नमः ॥ नत्ता वधी स कलमीर्थक सनय
रु सुखं यय नवस साहित्यमात्मा ॥ यरूष्या रूति

षयमनिरि स्रमस्तत्वां कमु मूर्ति शिवदा कि यर्ग नमा
मि ॥ नमा मुननायति ॥ सिद्धि नमु कियो न मूर्ति ॥ कमधुल
युषा रुक न समर्थयामि ॥ वाक् (दान) नवम ॥ न अथादि
सूर्याय ॥ ॐ नमः ॥ नखं मुमधुमत्तादियु नमस्तु न ॥ ना
सा ॥ नर्धया नयुजा ॥ नात्सयुजा स्वासनो न ॥ ॥ नखं रुकाय
॥ ॐ मर्दा ॥ नव उरु स्तथादिन विधिर्थय रूयाय ॥ ॐ कः

१
थानस्त्रिगुणि॥ धावेकनर्हा॥ यथायथाविधि मनुष्यकः
सहस्रवर्ष॥ ॐ न त्वाङ्गामीत्यादि द्वात्रिंशत्॥ विष्णुमूलनक
सहस्रवर्ष॥ श्रीकेशवादि द्वादशनायाय द्वात्रिंशत्
१२॥ ॐ यज्ञैरर्गति॥ १२॥ नवग्रहया॥ ॐ आकषुति रे
त्यादिना कया सवदसह॥ १०॥ अष्टकमादिवदसह॥
६॥ मासादिवदसह॥ २॥ स (मनयूजा॥ वसिष्ठया॥ ६॥

वद्यानयूजा॥ दूखापिखायूजा॥ कलखयूजा॥ मलानड
नयूजा॥ वदुक॥ गदा॥ (मग्रय॥ कीमालिमेऊगाथेयूजा
याये॥ कलहापुनिष्ठा॥ सखाकृति॥ ॥ देवस्यारुसस
वाथेसकोवसाखिनरुव स्ववसिखस देवस्यारुस
यथागोमनयादुस येसहासवाय॥ थंयुमादागया॥
विनरुयाव॥ आकृतिविय॥ ॐ आयं गोमलनयन॥ ॥

सत्वाय॥ धर्मं धर्मं॥ यत्तु माननस्वानकं नकाव सव
जनदायकाव सोला सोलवान॥ कमायुलिकाखानवि
हायाव सावानवान॥ ॐ क्क द्क पानयासागाडा क्क स्क
स्वानकं तानकं॥ ध्क्क मूलनसासायायदवलननिग्रा
लखाकासा॥ हागाननमकुनादिविधिधर्मं सासासावदं
गायनसायूजा॥ ॥ गवदधिदीमूर्कयब्दमासननम

॥ पृथ्वीशं नवं पादार्थं रुक्मार्थं चन्दनं मङ्गायवीर्यं यथा
नैपूजयेत्॥ ॥ यन्नयेत्तुना॥ ॐ नन्दायैशं ॐ रुद्रा
यैशं ॐ समनसायैशं ॐ सुधीलायैशं ॐ सुमयैशं ॐ
रुगन्मातृशं ॐ वक्त्र (ह)शं ॐ विष्णुवैशं ॐ सर्वतीर्थेसा
शं ॐ महादेवायशं ॐ रुवान्मैशं ॐ धर्मस्वायशं ॐ
कम्बलाहवतलायांशं ॐ नृदिनीकमात्रायांशं ॐ हादि

रास्क नाथां॥ॐ वायव्यं॥ॐ तन्मयं॥ॐ मनस्वलां॥
ॐ यक्षमायां॥ॐ संध्यां॥ॐ हृदयं॥ॐ यक्ष
नाक्षीयां॥ॐ साध्यां॥ॐ धर्मां॥ॐ सुधर्मा
यं॥ॐ गन्धर्व्यां॥ॐ यन्नम्यां॥ॐ नृप्यां॥॥
ॐ नकादशां॥ॐ नक्षत्रां॥ॐ चिन्तां॥॥
ॐ सामां॥ॐ द्वादशां॥ॐ गंगायं॥ॐ यम

नायेश॥ ॐ सनस्रलेश॥ ॐ नन्दायेश॥ ॐ कृताघनायेश॥
 ॐ नृक्षारिणिकेशोदवशा॥ ॐ यथिकेश॥ ॐ सकसा
 गत्रशा॥ ॥ धूयदीपकायभयनीन॥ ॐ वसुन्धनायवि
 द्वादेहमित्रायधीमहि। त्वन्नाहमियवादयान्॥ कदा
 स्थिताहलसा॥ यं लिंगयादं पूजाया॥ ॐ नीलकण्ठ
 यविद्वादेमहादेवायधीमहि। त्वन्नाहमियवादयान्॥

मयत्यमर्त्यं विद्मं गवां ह्यंतां गमयन्ते ॥ सोऽत्र रुये ४
सर्वहिताः यविताः यक्ष्मा वाहा यः ॥ यमिगृह्णन्तु मयस्य
गमव मेलाक्षमा नवः ॥ ॐ सोऽत्र रुये ४ यमिगृह्णन्तु मयस्य
यमयान्ताः सर्वमवर्जयन्तु मया दत्तं मिदं समा ॥ ॐ
देवानां वयि रुधिरं सर्वेषां योनिदाक्षमी ॥ सर्वेषां म
ख्यं गीर्वाणं कवर्त्तु यमिगृह्णन्तु ॥ सर्वयक्ष्मरुत्तमस्य स

वदानरुत्तमस्य स सर्वयक्ष्मरुत्तमस्य माददाति गवा
क्षिकं ॥ यक्ष्ममानस्य श्री ३ गिरिमाधवरुद्रा नक्षत्राः
यमकनस्य कान्तिमहायवर्त्तु सर्वैः यदानरुत्तमस्य
त्वं ॐ दं गमयस्य कं गमधर्मं योनायुतदेवर्गं गममाह
योऽत्र रुये मयस्य पुदद ॥ अननदाननयथा ॥ शुक्ररुत्तमः
संयाय मयुः सायुनकः ॥ अक्षुतिवियसात्वाय ॥ ॐ नमः

लीलमाधवया पूजा :
शितलाया स्तोत्र



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सायतिष्ठा ॥ युति ॥ यासस्त्री सर्वहृमत्या
दि ॥ नमो गन्मादिष्ट्या ॥ नमि कृष्टुयादकिनखप्रदानादाकावा
कावगमनखायकावा ॥ दशवसि विषा ॥

ॐ लक्ष्मी नारायणाय ॥ गिरिवधनमिना ॥ वेनभया
सनह्ला ॥ वाभपुष्टगादेश ॥ ह्यनिगकत्रधनो धर्मभा
कार्थहृष्टुष्टा ॥ विष्टुष्टे कृष्टवासा ॥ दनूज हृष्टे कथाद
दि ॥ (धनवक्र) ॥ (भला) ॥ कोमादाश्रयं पद्मं धनत्रिकनेम
नेष्टप ॥ नमो नमो नमो ॥ ॥

ॐ नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो ॥ ॥

१ न्यासयाय ॥ ॥ श्री श्री श्री श्री गलाय अक्षय स्वा
दि ॥ ॥ श्री न ॥ श्री श्री श्री श्री गलाय नंदी वास
स्त्री दिगम्बरी । मा ऊ नी के ल सा ध नी ह्ये पो ली क
ने म लु का ॥ ॥ मनु ॥ श्री श्री श्री श्री गलाय पाद
की ॥ ॥

१ नमः श्री श्री गलाय ॥ स्कन्द उवाच ॥ लग्न
नंद वंद वं श्री गलाय लु तं धु लं ॥ वकु म ह्यं
॥ श्री श्री श्री श्री गलाय पं हं ॥ १ ॥ श्री श्री श्री श्री गलाय
व ॥ वन्दे श्री गलाय नंदी वास ॥ सर्वत्र गलाय पं हं ॥
यामासाय निवर्तं न विष्णु उवाच ॥ २ ॥
श्री गलाय श्री गलाय श्री गलाय श्री गलाय श्री गलाय ॥
दा

१५
१०
५
विष्णु उक्त या क हं किं पुं गत्य पु ध स्य नि ॥ ३ ॥
यत्ना मुद क म (ध) नु क्षा त्वा पू ज य न न न ॥ विः
स्फुट क ह र्श धा न ग ह न स्य न ज्ञा य न ॥ ४ ॥
गी ग लं क री द ग्ध पू मि ग न्ध ग न स्य च ॥ पु धाः
मृ च कृ ष ४ पुं ग त्वा मा ज्ञा न्ध नो स धं ॥ ५ ॥ धा न
लं ग द ज्ञा ग ग्म नृ धां ह न भा द् कृ ज न ॥ विष्णु

धामाङ्क

५
० क विष्णु धा नी त्व भ का मृ ग व र्षि ष्ठा ॥ ६ ॥ ग न
ग धु ग ह्ना नो ग म श्च चान्ध दा नृ धा मृ धा त्व द न
ध्वा ने मा नृ ध धा ने ल यानि स क र्य ॥ ७ ॥ न म नु
नो ष ध कि चि त्वा प नो ग स्य वि श न ॥ त्व भ क
धी ग लं ग री नो नो प स्या मि द व र्गा ॥ ८ ॥ मृ ना
न ग नु स द धा नो नो रि क न म ध स ह्नि र्गा ॥ य त्वां

पूजयन् देवी नमस्तु त्वं न जामयन् ॥ ८ ॥ अष्टकं
भागलक्ष्म्या रा ४ प ८० स्मानव ४ सदा ॥ विष्णु
कलसंधार्यं पर्वस्वस्त्याय नमस्तु ॥ १० ॥ भा
गलक्ष्म्यकभयेवं नन्दयं सत्यं चिन् ॥ दानव्यं
गुह्यं नमस्तु ॥ एकैष्टुद्रा निनायन् ॥ ११ ॥ ध्या

कल्प

नव्यं पथि नव्यं च ॥ बुद्धा लक्ष्मि मन्त्रि नमस्तु ॥ विष्णु
कविना भारा पर्वस्वस्त्याय नमस्तु ॥ ०० नि
शास्त्रेन्दु पूर्वा ॥ ध्या भागलक्ष्म्यकं समाप्ता ॥ ॥

[illegible]

सं॥ नादवंदिदय नस्य॥ स्वविदं कथकापकवि
प्रदखिने॥ कन वाहूच मंडयन पाठ्य पायं च
वाताहं॥ नाहं अवंतीवीक म॥ कु॥ यमनाहं
यि सुदसं ककू पा नादलं नस्य॥ नृः उरं पूति
न पाहं न सस्या मल नास्तीती नृ नासिका॥ अ
य॥ द

श्रीगणेशाय नमः ॥ ज्ञानायाय तां विवताति स्वप्नो देवपि
ताय मतापन्नाया इति कुरु ॥ अत्र कुरु ॥ अत्र कुरु ॥ अत्र कुरु ॥
कुरु ॥ १२ अत्र कुरु ॥ अत्र कुरु ॥ अत्र कुरु ॥ अत्र कुरु ॥

५३० ५५ कुरु ॥ ॥ ५३० ५५ कुरु ॥ ॥ ५३० ५५ कुरु ॥ ॥ ५३० ५५ कुरु ॥ ॥
५३३ ५१५ कुरु ॥ ५३३ ५१५ कुरु ॥ ५३३ ५१५ कुरु ॥ ५३३ ५१५ कुरु ॥ ५३३ ५१५ कुरु ॥
५२० ५४०
५११

